IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।''

"A Study of The Emotional Intelligence of Prospective Teachers at The B.Ed. And D.L.Ed. Levels in Rural Areas."

***Sunita Soni, **Dr.Usha Rathore**

*Rsearch Scholar, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

**Research Guide, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना है। भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का आकलन करने से अन्य शिक्षकों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में संवेगात्मक बुद्धि के उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के भावी शिक्षकों में राजस्थान के पाली जिले से 160 प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही है। आँकड़ो के सकंलन हेतु संवेगात्मक बुद्धि का मापन – डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : ग्रामीण क्षेत्र, भावी शिक्षक, बी.एड., डी.एल.एड., संवेगात्मक बुद्धि।

प्रस्तावना :

शिक्षण–प्रशिक्षण की प्रक्रिया केवल ज्ञान का आदान–प्रदान नहीं है, यह एक भावनात्मक और सामाजिक संवाद भी है। शिक्षक केवल पाठयक्रम की जानकारी देने वाला व्यक्ति नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के निर्माण में मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। विशेष रूप से भावी शिक्षक (Pre-service Teacher) यानी वे छात्र–शिक्षक जो शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं, उनके लिए संवेगात्मक बुद्धि का विकास अत्यंत आवश्यक है। कारण यह

है कि भविष्य में उन्हें विद्यार्थियों की विविध भावनात्मक आवश्यकताओं, समस्याओं और व्यवहारों से निपटना होगा। यदि भावी शिक्षक स्वयं अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होंगे, तभी वे कक्षा में एक सकारात्मक और रचनात्मक वातावरण तैयार कर पाएंगे।

आज के परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में, जहाँ बहुसांस्कृतिक कक्षाएँ, प्रतिस्पर्धा, तकनीकी दबाव और विविधतापूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी उपस्थित रहते हैं, वहाँ शिक्षकों पर मानसिक और भावनात्मक दबाव बढ़ गया है। ऐसे में, केवल विषय–ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षक को भावनात्मक रूप से सशक्त होना भी आवश्यक है। शोध से यह सिद्ध हुआ है कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले शिक्षक न केवल तनाव का सामना बेहतर तरीके से करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करते हुए शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार भी करते हैं।

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य भावी शिक्षकों को केवल विषयगत ज्ञान देना नहीं है, बल्कि उनमें ऐसा दृष्टिकोण विकसित करना है जो उन्हें एक संवेदनशील, सहानुभूतिपूर्ण और प्रभावी शिक्षक बनाए। भावी शिक्षकों को शिक्षण के साथ–साथ विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थिरता और सामाजिक समायोजन पर भी ध्यान देना होता है। यदि वे स्वयं भावनात्मक रूप से संतुलित होंगे तो वे विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकेंगे।

प्रस्तुत शोध का मुख्य लक्ष्य है कि ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करके अन्य सामान्य विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य प्रस्तुत कर सके।

समस्या कथन :–

''ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. स्तर के भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन।''

"A Study of The Emotional Intelligence of Prospective Teachers at The B.Ed. And D.L.Ed. Levels in Rural Areas."

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के पाली जिले के भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु सर्वप्रथम पाली जिले के भावी शिक्षकों के छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं में ग्रामीण क्षेत्र में अध्ययनरत् लगभग 160 प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण संवेगात्मक बुद्धि – डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु पाली जिले में स्थित ग्रामीण क्षेत्र के भावी शिक्षकों के महाविद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए डॉ. एस. के. मंगल एवं श्रीमती शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित मापनी का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान (N), प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1– भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. एवं डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका

मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

भावी शिक्षक ग्रामीण	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
बी.एड.	80	120.33	16.63	2.83	3.86	158	1.36
डी.एल.एड.	80	116.47	19.06				

'' 0ण्05 **सार्थक स्तर**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट हैं कि भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. व डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों की गणना के आधार पर भावी शिक्षकों में बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 120.33 तथा डी.एल.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 116.47 प्राप्त हुआ एवं बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का प्रमाप विचलन 16.63 तथा डी.एल.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का प्रमाप विचलन 19.06 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों एवं प्रमाप विचलनों के आधार पर गणना की गई है जिसमें क्रान्तिक अनुपात मान 1.36 प्राप्त हुआ। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता का मान 1.96 गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान सार्थकता स्तर के मान से कम है। अतः उक्त परिणाम के आधार पर परिकल्पना–1 ''भावी शिक्षकों में ग्रामीण क्षेत्र के बी. एड. एवं डी.एल.एड. में अध्ययनरत छात्रध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नही है।'' अतः परिकल्पना–2 को स्वीकृत किया जाता है।

ग्राफ

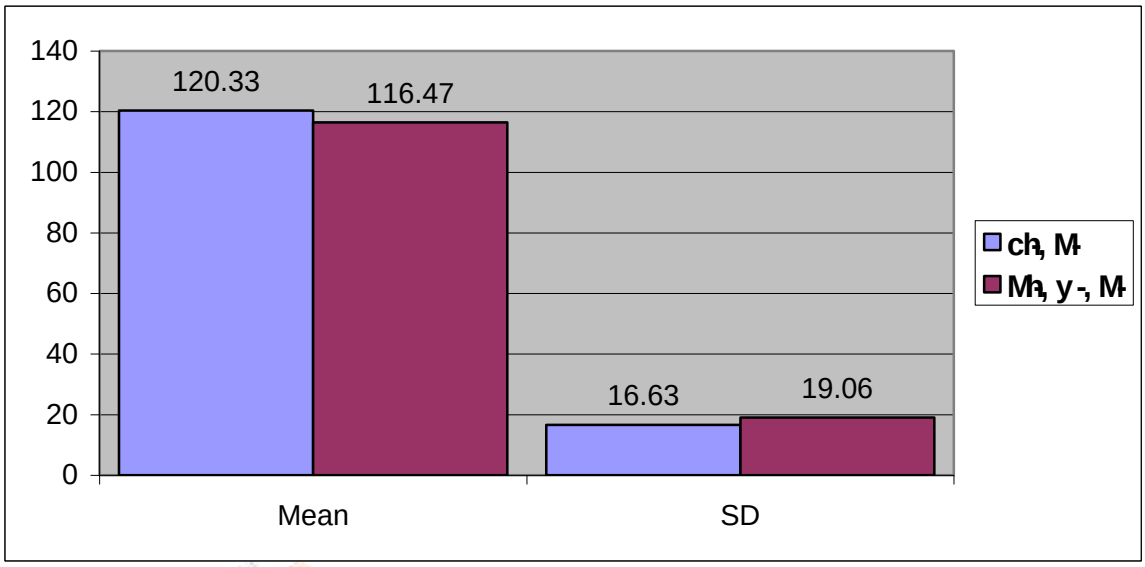

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- **पांडेय, एल. (2021)** सोशल एंड इमोशनल लर्निंग. नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान।
- **शुक्ला, के. (2020)** शिक्षक शिक्षाः सिद्धांत, व्यवहार एवं चुनौतियाँ. नई दिल्ली : प्रकाशन संस्थान।
- **तिवारी, जे. (2018)** भारतीय शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं भावनात्मकता. वाराणसी : साहित्य भवन।

❖ शोध–लेख / पत्रिकाएँ (Research Papers / Journals)

- **सिंह, आर. (2017)** भावी शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि एवं आत्म–प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 45 (3), 112–124।
- **शर्मा, ए. (2019)** संवेगात्मक बुद्धि और कक्षा प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका. शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 39 (2), 87–101।
- **यादव, एस. (2021)** शिक्षक–प्रशिक्षण में संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव. राष्ट्रिय शिक्षाशास्त्र जर्नल, 12 (1), 55–66।
- **सिंह, के. (2018)** भावी अध्यापकों में भावनात्मक परिपक्वता एवं तनाव के स्रोत. इंडियन जर्नल ऑफ़ एजुकेशन, 28 (4), 44–58।
- **मिश्रा, बी. (2020)** संवेगात्मक बुद्धि और शिक्षण दक्षता का सह–संबंध अध्ययन. शैक्षिक अनुसंधान अंतर्राष्ट्रीय, 14 (2), 98–110।
- **चौहान, टी. (2022)** शिक्षक–प्रशिक्षुओं की आत्म–जागरूकता और भावनात्मक नियंत्रण. एजुकेशन टुडे, 33 (1), 77–88।
- **खत्री, एस. (2019)** भावी अध्यापकों के व्यक्तित्व व EI के संबंध. मानव विकास जर्नल, 16 (3), 42–53।
- **गुप्ता, एम. (2020)** संवेगात्मक बुद्धि में लिंग एवं क्षेत्रीय अंतर. शिक्षाशास्त्रीय निक्षेप, 11 (2), 65–76।